



MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318



vidyawarta®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal
Issue-31, Vol-05 July to Sept. 2019

2019-20



Editor
Dr. Bapu G. Chalap

फसल जैसे— चना, बाजरा, ज्वार, कोदो, कुटकी आदि बोते है। वही मध्यम वर्ग के कृषक मुख्य फसलो के साथ एक या दो फसलो को बोते है जैसे— सोयाबीन के साथ मक्का, गेहूँ के साथ चना आदि और वहुद कश्क अधिक लाभ कामाने वाली फसलो को बोते है गन्ना, साग—भाजी,आदि इन तथ्यो से स्पष्ट है की बैतूल जिले की कृषि शस्य संयोजन का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देता है और इसमें परिवर्तन भी देखने को मिल रहा है।

सन्दर्भ सूची:-

१. हुसैन, माजिद - कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन, जयपुर (२०००) पृ. सं.१९४
२. शर्मा कमल, कुमार प्रमिला— कृषि भूगोल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल (२०१६) पृ. सं.२२९
३. जौहरी दीपा, कोचर मिनी— आर्थिक भूगोल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी भोपाल(२०१५) पृ. सं.६०,६१
४. सिंह यू.बी. - कृषि भूगोल, राजीव प्रकाशन, मेरठ पृ.सं.१०६
५. राम प्रसाद,यादव सत्यवीर— कृषि पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण नियोजन, रधा पब्लिकेशन नई दिल्ली (२००७) पृ.सं.८२
६. सिसौदिया एम.एस,तिवारी अर्चना भार्गव— कैलाश पुस्तक सदन (२०१७) पृ.सं.५८
७. तिवारी आर.सी.,बी.एन.सिंह - प्रयाग पुस्तक भवन इलहाबाद (२०१०) पृ.सं.११६
८. हरीश कुमार खत्री - कैलाश पुस्तक सदन (२०१६) पृ.सं.१३०
९. पाण्डे जे.एन.,कमलेश एस.आर— वसुन्धरा प्रकाशन,गोरखपुर (२००९) पृ.स. १०६

□□□

Teacher-in-charge

Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

स्त्री स्वाधीनता का प्रश्न और

Dr. JOTIMAY BAG
DESHABANDHU MAHAVIDYALAYA
BARRACKPORE, WEST BENGAL

पश्चिमी शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने स्त्रियों के विचारों को काफी आंदोलित किया। दृढ़ता के साथ डटे रहने की प्रवृत्ति बढ़ी। नए में होने वाले इस जागरण का परिणाम यह एक प्रबल जनमत नारियों के पक्ष में उभरा जो ब्रिटिश सरकार भारतीय प्रथा को समर्थन संस्था को प्रभावित करने वाले किसी कानून में रुचि नहीं रखती थी, उन्हें भी इस प्रबल अपेक्षा करने का साहस नहीं हुआ, परिणाम एसेम्बली में समय-समय पर ऐसे कानूनों जिनके कारण नारी-वर्ग को न्यायोचित अधिकारों की सुविधा हुई। ऐसे कानूनों में हिन्दू इनहेरिटेन्स अमेन्डमेंट ऐक्ट सन् १९२९ और मैरिज रिकॉर्ड्स ऐक्ट १९२९ विशेष रूप से हैं। सन् १९२९ के उत्तराधिकार विधायक विशेषता इस अर्थ में है कि अब पारिवारिक नतिनी, बहन और बहन की संतान को प्राप्त हुआ। इन्हीं दिनों विवाह की अनुसंधान में कानून बनाने के लिए भी आंदोलन था। बाल-विवाह निषेध के विषय में एक सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त हो और उसे मिले इस विषय में भी आंदोलन चल रहा। सन् १९३७ में हिन्दू-विमेन्स एडक्ट पारित हुआ। इससे ही आगे बढ़कर तो आजादी के लिए सन् १९४६ में हिन्दू सेपरेट मेन्टिनेन्स एंड रेसिडेन्स ऐक्ट भी पारित हुआ।



ISSN : 2249-930X
(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

हिंदी अनुशीलन त्रैमासिक

2019-20



Dr.
Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan



प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

वर्ष 62

दिसम्बर 2020

अंक 4

सिनेमा और साहित्य : 'परम्परा की खोज'

डॉ. जोतिमय बाग

सिनेमा' की यात्रा लगभग सौ साल पुराना है, और आज की दुनिया में यह एक महत्वपूर्ण कला का साधन होने के साथ-साथ एक शक्त सामाजिक चेतना का माध्यम भी बनता चला जा रहा है। शायद बन चुका है। निःसंदेह इस छोटी सी समय में सिनेमा ने एक लम्बी यात्रा तय की है। आज सिनेमा का दखल अब अस्वाभाविक नहीं रह गया है। आज सिनेमा का बढ़ता कदम इस प्रश्न को जन्म दे रहा है, कि 'हिन्दी साहित्य में सिनेमा है या हिन्दी सिनेमा में साहित्य'। आज यह प्रश्न भले लघुकार हो पर...

जहां तक मनोरंजन का सवाल है, आज साहित्य से सिनेमा काफी आगे है। आज शायद इस प्रश्न का उत्तर सबके पास है कि "साहित्य के पास पाठक अधिक है या सिनेमा के पास दर्शक।" हमारा हिन्दी साहित्य काफी समृद्ध है और पुरानी भी। आदिकाल-भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल इतिहास का अंग ही नहीं बल्कि एक भव्य परम्परा भी है।

भक्तिकाल एक विशाल सांस्कृतिक जनांदोलन का विस्फोट है। इसमें हिन्दू-मुस्लिम, दलित-स्त्री सभी का योगदान है। एक तरफ हमें राम और कृष्ण साधक मिले तो दूसरी तरफ संत और सूफी। जीतनी लम्बी परंपरा राम और कृष्ण भक्त कवियों का है उतनी ही लम्बी परंपरा संत एवं सूफियों का रहा है। सूफी सम्प्रदायों का विकास चार पीरों से माना जाता है ये हैं- मुर्तजा अली, ख्वाजा-हसन बसरी, ख्वाजा ख्वाजा आजमी तथा अब्दुल वहिद बिन जैद कूफी। ये सभी सम्प्रदाय हजरत मुहम्मद से अपने वजूद को जोड़ते हैं। सूफियों की दृष्टि से प्रथम चार खलीफाओं में हजरत अली ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। भारत वर्ष में चार प्रमुख सूफी सम्प्रदाय दृष्टिगोचर किया गया है- चिश्तिया, कादरिया, सुरहवर्दिया और नक्शबन्दिया। प्रथम तीन सम्प्रदाय हसन अल अबरी से सम्बन्धित है और चौथा अबू वक्र से।

चिश्ती सम्प्रदाय-भारतवर्ष में चिश्ती सम्प्रदाय का काफी प्रचार प्रसार हुआ इस सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तकों में दो नाम मिलते हैं, ख्वाजा इसहाक शामी चिश्ती और उनके शिष्य ख्वाजा अबू अब्दाल चिश्ती। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने इस सम्प्रदाय का प्रचार और प्रसार किया। हमें आज भी उनके नाम लोगों के जुवां पे मिलते हैं। ख्वाजा मुईनुद्दीन का जन्म सन् 1142 के आस-पास माना जाता है। इनकी मृत्यु सन् 1236 अजमेर में हुयी। अजमेर दरगाह आज भी इसकी शान और शौकत को बढ़ा रही है। शिहबुद्दीन, बाबा फरीद आदि इस सम्प्रदाय से जुड़े हैं।

सैय्यद मुहम्मद हाफिज के अनुसार चिश्ती भारत का सर्वप्रथम प्राचीन सूफी सिलसिला है। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती सन् 1192 ई. में (12वी. शता.) शिहबुद्दीन गोरी की सेना के साथ भारत में आये और बाद में इन्होंने चिश्तियां परंपरा की नींव डाली। भारत में इन्होंने बहुत से हिन्दू रीति रिवाजों को अपना लिया। चिश्तियों की प्रकृति उदार थी। ईश्वर प्रेम और मानव की सेवा उनके प्रमुख सिद्धांतों में से थे। इस सिलसिले के सूफीसंत हिन्दू योगियों की भाँति जीवन व्यतीत करते थे। वे अद्वैतवाद के परंपरागत नियमों में विश्वास रखते थे तथा निजी संपत्ति के खिलाफ थे। वे समा में विश्वास रखते थे। मुईनुद्दीन चिश्ती ने अजमेर में अपना निवास स्थान बनाया। उनकी समाधि अजमेर में ख्वाजा साहब के नाम से

AgVO₃ Nanorods Decorated with Polypyrrole and Tetraphenylporphyrin as Ternary Catalysts for Oxygen Electrode Reactions

Papri Mondal, Uday Kumar Ghorui, Jit Satra, Sourav Mardanya, Divesh N. Srivastava, Gopala Ram Bhadu, and Bibhutoosh Adhikary*

Cite This: *ACS Appl. Nano Mater.* 2020, 3, 3876–3891

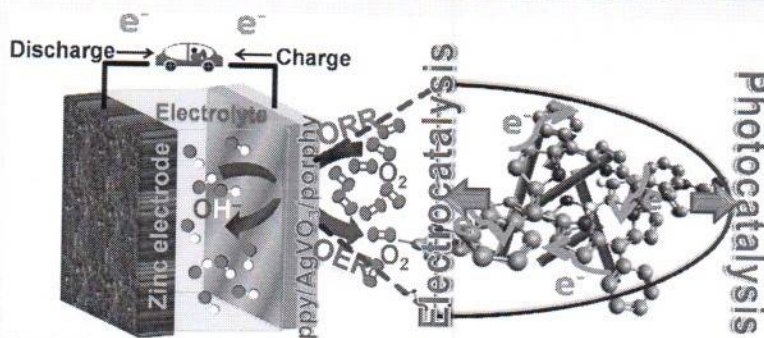
Read Online

ACCESS |

Metrics & More

Article Recommendations

Supporting Information



ABSTRACT: Exploring a sustainable, cost-effective, and efficient bifunctional electrocatalyst for oxygen reduction reaction (ORR) and oxygen evolution reaction (OER) is very significant as well as challenging to develop an energy conversion–storage system. Herein, we demonstrate a fabrication technique of an organic–inorganic hybrid polypyrrole (ppy)/AgVO₃, and its surface was further modified by porphyrin (porphy) to boost its catalytic performances. The C,N-based ppy/AgVO₃/porphy nanocatalyst acts as a charge transport highway to accelerate the sluggish OER/ORR kinetics and results in its impressive bifunctional performances. It exhibits an outstanding four-electron ORR activity with higher onset potential (1.03 V) and remarkable OER catalytic performance carrying a lowest overpotential (η_{10}) of 220 mV, largely outperforming AgVO₃ and ppy/AgVO₃. Initially the very low ORR/OER activities of AgVO₃ nanorods come from poor O₂ and OH[−] adsorption on V⁵⁺ sites due to its extremely low electrochemical active surface area (ECSA) and poor electrical conductivity. The ppy loading has improved its catalytic performances by providing new active sites due to the presence of pyrrolic-N. Finally, the active site density was greatly enhanced after porphy loading over ppy/AgVO₃, as porphy offers additional pyridinic-N along with pyrrolic-N atom. Furthermore, developed mesoporous surface after porphy incorporation provides high electrical conductivity, large surface area, enhanced charge–mass transport, close electrolyte–catalyst contact, and improved stability. Considering its bifunctional activity, NComp has been further evaluated by integrating it into a prototype zinc–air battery (ZAB), where a low discharge–charge voltage gap (0.71 V at 10 mA·cm^{−2}) and a large peak power density (301 mW·cm^{−2}) were achieved. Moreover, the NComp-based rechargeable ZAB (RZAB) is efficient enough to be operated evenly for 100 discharge–charge cycles. Most importantly, our findings may offer a powerful yet easy fabrication method of corrosion resistant high-performance catalyst through regulating active sites for investigating catalysis.

KEYWORDS: polypyrrole/AgVO₃/porphyrin, bifunctional oxygen electrocatalyst, zinc–air battery, high current density, photocatalysis

1. INTRODUCTION

With the ever-growing concern about the surging global energy crisis and environmental pollution, the realization for renewable, green, sustained, and clean energy supplements have been unprecedented in the past few years. To ensure the prompt and salubrious development of economy and meet the demands of sustainable energy requirements,¹ numerous attempts have been urgently made for the development of novel and renewable energy storage devices such as metal–air batteries,² water splitting, and fuel cells,^{3–5} etc. Rechargeable zinc–air batteries

(RZABs) have caught worldwide attention due to their considerable energy density, large capacity, cost-effectiveness, environmental amity, and safety.^{6–10} The key oxygen reduction

Received: March 2, 2020
Accepted: March 17, 2020
Published: March 17, 2020



<https://doi.org/10.1021/acsanm.0c00604>
ACS Appl. Nano Mater. 2020, 3, 3876–3891

Sonochemically Synthesized Spin-Canted CuFe_2O_4 Nanoparticles for Heterogeneous Green Catalytic Click Chemistry

Bibhas Mondal,^{†,‡} Mousumi Kundu,[†] Siba Prasad Mandal,[†] Rajat Saha,^{*,†} Ujjal Kanti Roy,^{*,†} Anirban Roychowdhury,^{§,||} and Dipankar Das^{||}

[†]Department of Chemistry, Kazi Nazrul University, Asansol 713340, India

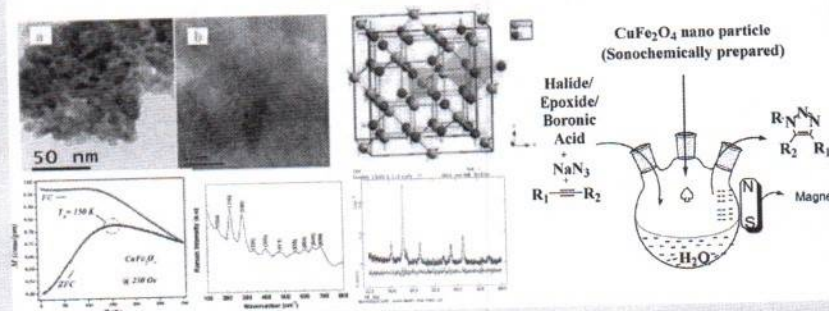
[‡]Department of Chemistry, NIT-Durgapur, Durgapur 713209, India

[§]Department of Physics, Krishnath College, Berhampore 742101, West Bengal, India

^{||}UGC-DAE Consortium for Scientific Research, Kolkata Centre, III/LB-8, Bidhannagar, Kolkata 700098, India

Supporting Information

Catalytic Green Click Chemistry



ABSTRACT: Heterogeneous green catalysis by using magnetically separable nanometal–oxide catalysts has become a subject of prime focus recently. PXRD (powder X-ray diffraction), FESEM (field emission scanning electron microscopy), and HRTEM (high-resolution tunneling electron microscopy) with IR and Raman spectroscopy are applied to analyze the structural and microstructural properties of nanosized (~ 15.3 nm) CuFe_2O_4 synthesized by both sonochemical and mechanochemical processes. The sonochemical process provides a better uniformity of sizes of the nanoparticles (NPs). Rietveld refinement with the PXRD pattern reveals the inverse spinel-like architecture of CuFe_2O_4 NPs. The Raman spectra also indicate the phase purity of the synthesized material. The static magnetic measurements are performed at different magnetic fields and temperature ranges from 300 to 5 K, which confirms the existence of the ferrimagnetic phase mixed with some finer superparamagnetic (SPM) nanophases within the sample. Unsaturated magnetization is observed even at an applied 5 T magnetic field for the presence of spin-canting nature in the partially inverted copper ferrite phases at the surfaces of the nanoparticles. Now, these coupled magnetic CuFe_2O_4 NPs are used as a heterogeneous catalyst for three-component Huisgen 1,3-dipolar cycloaddition click reaction in aqueous media. By this catalyst system, we were able to couple alkyl halide, epoxide, or boronic acid with alkynes efficiently to furnish 1,4-disubstituted 1,2,3-triazoles in excellent yields within very short reaction time. The test for heterogeneity, reusability, and reproducibility of the catalyst has also been performed successfully without prominent decrease in yield up to the fifth cycle.

1. INTRODUCTION

Heterogeneous green catalytic click chemistry is very important from several perspectives: (a) green chemistry: the reaction proceeds without using any solvent only in the presence of the catalyst, (b) easy separation: the catalyst can be separated from the mixture by simple filtration, (c) click chemistry: click chemistry provides the maximum conversion.¹ Catalytic click chemistry is a unique approach for the conversion of reactant molecules to a particular desired product in a single step or consecutive steps. Several types of heterogeneous catalysts such as MOFs,² metal nanoparticles (NPs),³ and metal–oxide NPs⁴ are used for such click

chemistry, while usage of magnetically separable spinel ferrites for such application is relatively scarce.⁵ On the other hand, copper-catalyzed azide–alkyne cycloaddition (CuAAC) is an important “click chemistry” reaction which has been extensively applied in chemical biology, medicinal chemistry, and materials science. The CuAAC reaction of terminal alkynes provides a mild and efficient synthesis of 1,4-disubstituted 1,2,3-triazoles. However, such reaction in the

Received: May 21, 2019

Accepted: August 2, 2019

Published: August 16, 2019

2019-2020



Indian Journal of Chemistry
Vol. 59A, August 2020, pp. 1076-1083



Reactivity of electrochemically synthesised zinc nanofiber in facile reduction of nitro and azide compounds

Siba Prasad Mandal^a, Bibhas Mondal^{a,b}, Rajat Saha^a, Mousumi Kundu^a & Ujjal Kanti Roy^{a*}

^aDepartment of Chemistry, Kazi Nazrul University, Asansol, West Bengal-713340, India

^bDepartment of Chemistry, National Institute of Technology Durgapur, West Bengal-713209, India

Email: uroccu@gmail.com

Received 31 December 2019; revised and accepted 12 May 2020

Electrochemistry is used in generation of metallic nano zinc wire from aqueous zinc chloride. For this electrochemical process we have designed a unit galvanic cell. During the electrochemical process both aliphatic and aromatic nitro and azide compounds undergo facile reduction to the corresponding amines. $ZnCl_2$ is used as stoichiometric reagent and causes electrochemical deposition of zinc in cathode. During the process wire shaped nano zinc architecture has been formed in cathode which is supposed to be the active reagent for reduction. The cathode deposited material has been characterised by powder XRD, XPS, FESEM, HRTEM, EDX, SQUID etc. The corresponding amines are prepared in good yields. Both zinc salts and aqueous solution can be recycled.

Keywords: Electrochemistry, Nano zinc, $ZnCl_2$, ITO glass, FESEM, SQUID, Nitro/Azide/Amine Reduction

With respect to sustainability electrochemical methods are well accepted because waste materials are eliminated and metal reagents can be reused¹. On the other hand, aqueous reactions have been widely studied in order to reduce the use of flammable, toxic, or carcinogenic organic solvents². A combination of aqueous and electrochemical conversion will be an excellent green synthetic approach^{1,3}.

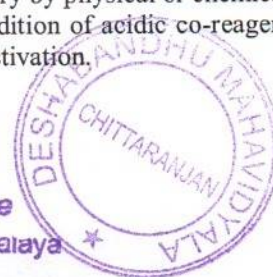
Nanomaterials are deposited on cathode during the electrochemical process. Due to higher surface area nanomaterials show higher reactivity compared to bulk⁴. Synthesis of nanoarchitectures of different metals of a particular shape and size is always important because of their applications in nanotechnology. Metallic nanofibers have a huge number of technological applications. Perhaps the most obvious use for nanofibers is in electronics. Some nanofibers are very good conductors or semiconductors, and could fit millions more transistors on a single microprocessor. As a result, computer speed would increase dramatically. Nanofiber networks exhibit precisely the properties required for MIS silicon solar cells. Closely spaced and conductive metal fibers induce a junction for homogenous carrier extraction, and simultaneously a high optical transparency. Electrochemically synthesized fiber like nanoarchitecture was known in literature because of its wide application in

nanotechnology⁵. Here we wish to report the temperature and agitation effect on electrochemical synthesis of metallic zinc nanofiber from aqueous zinc chloride solution (pH 2-2.5). The use of *in situ* generated zinc nanofiber for the facile reduction of nitro and azide functional groups was also explored. Process is efficient and a range of functional groups are stable in these mild reaction conditions. Cathode deposited zinc nanofiber was characterized by XRD, XPS, FESEM, HRTEM, EDX, SQUID.

Transformations of organic nitro and azide compounds to corresponding amines are very important processes in synthetic point of view because of their use as building blocks in natural products or multi step synthesis. Metal-mediated reductions are well-known examples of organic reactions in aqueous media⁶. But metal salts have been used in over stoichiometric ratio in many cases and subsequently end metal salts were generated as junk products. These junk metal by-products are also difficult to separate. In this respect zinc metal is very useful because of its low toxicity and cost. On the other hand lots of methods have been developed in aqueous medium because of its green nature. But, activation of zinc is necessary by physical or chemical methods. In many cases addition of acidic co-reagent is necessary for chemical activation.

Teacher-in-charge

Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan





Dielectric response of ZrO₂-CeO₂ nanocrystalline solid solution above room temperature

S. Saha^a, H. Dutta^b, S.P. Mandal^c, S.K. Pradhan^d, A.K. Meikap^{e,*}

^a Department of Physics, Kulti College, Kulti, West Burdwan, 713343, West Bengal, India

^b Department of Physics, Vivekananda College, East Burdwan, 713103, West Bengal, India

^c Department of Physics, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan, West Burdwan 713331, West Bengal, India

^d Department of Physics, The University of Burdwan, Golapbag, West Burdwan, 713104, West Bengal, India

^e Department of Physics, National Institute of Technology, Durgapur, West Burdwan 713209, West Bengal, India

2019-20

ARTICLE INFO

Keywords:

Nanocrystal
Ball milling
Dielectric properties
Current-voltage characteristics

ABSTRACT

Here we report the dielectric response of partially stabilized zirconia above room temperature. The conductivity increases with rise in temperature and frequency, obeying a power law type nature. The frequency exponent study shows that the Correlated Barrier Hopping model governs the conductivity process. The value of dielectric permittivity increases with increase in milling hour. It is observed that both free charge and space charge conductivities increase as the temperature increases. The complex dielectric permittivity is found to be increased with increase in temperature and decrease with frequency. Complex impedance study shows the grain boundary resistance is higher than the grain resistance. The current density-electric field characteristics show that the Poole Frenkel Emission model is the best suited model for the prepared samples and the trap height varies non-linearly with temperature.

1. Introduction

Recently zirconia has developed interest not only in fields of pure research but also in industrial applications. Four different chemicals properties like basic, acidic, reducing and oxidizing properties have been observed in zirconia [1]. Also it shows three different temperature dependent polymorphs, namely monoclinic with space group P2_{1/c} (Room temperature - 1440 K), tetragonal having space group P4_{2/nmc} (1440 K-2650 K) and cubic phase having space group Fm $\bar{3}$ m (2650 K to melting point). Numbers of technical applications concern the cubic form of zirconia which is however not easily available. This engineered material is hard, wear resistant, show high fracture toughness and find applications in structural ceramic industries [2-4]. Apart from these, zirconia is characterized by high temperature ionic conductivity which enables to use this material in oxygen sensor, oxygen pumps and solid oxide fuel cells [5]. The partially stabilized zirconia (PSZ) is the mixture of cubic and tetragonal (or monoclinic) phases, and different methods have been extensively employed to develop PSZ at room temperature. Generally this is achieved by adding different dopants which act as stabilizer. The sol-gel method has been extensively

used to obtain nanocrystalline doped zirconia powders [6-8], but the main drawback of this process is high production cost, which makes it commercially unsuitable. In this study, we have developed nanocrystalline PSZ by ball milling method which is a very cost effective process [9,10]. The precursor passes through different mechanochemical phase transitions before reaching the desired state [11,12]. The key feature of this process is that the final product shows low temperature ductility and enhanced hardness. Earlier works suggest that room temperature stabilized cubic zirconia can be synthesized successfully by means of high energy planetary ball milling method either by adding dopant or even without adding dopant [13,14]. Structural and microstructural changes in different prepared samples have been evaluated by analyzing XRD patterns of different samples using Rietveld refinement method.

Further, grain and grain boundary play important role in determining the physical properties of the nanomaterials. So, we have studied the ac complex impedance spectroscopy to have an insight of the grain and grain boundary contribution. The electric modulus study provides information regarding the relaxation dynamics of the prepared samples. The ac and dc conductivity studies and I-V behaviour contain valuable information regarding the sample character. The electrical behaviour of

* Corresponding author.

E-mail address: ajit.meikap@phy.nitdgp.ac.in (A.K. Meikap).

<https://doi.org/10.1016/j.physb.2020.412000>

Received 16 October 2019; Received in revised form 30 December 2019; Accepted 6 January 2020

Available online 9 January 2020

0921-4526/© 2020 Elsevier B.V. All rights reserved.

Ajit Meikap
Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan





Synthesis and characterization of nano-zinc wire using a self designed unit galvanic cell in aqueous medium and its reactivity in propargylation of aldehydes

Bibhas Mondal^{a, b}, Siba Prasad Mandal^c, Mousumi Kundu^d, Utpal Adhikari^b, Ujjal Kanti Roy^{a, c}

^a Department of Chemistry, Kazi Nazrul University, Asansol 713340, India

^b Department of Chemistry, National Institute of Technology Durgapur, Durgapur 713209, India

^c Department of Physics, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan 713331, India

^d Department of Chemistry, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan 713331, India

ARTICLE INFO

Article history:

Received 7 May 2019

Received in revised form

5 July 2019

Accepted 6 July 2019

Available online 10 July 2019

Keywords:

Electrochemistry

Aqueous

Propargylation

Zinc

Nano wire

ABSTRACT

Electrochemistry is used for propargylation of carbonyls in aqueous $ZnCl_2$ medium. For electrochemical process we designed a unit galvanic cell. $ZnCl_2$ is used as stoichiometric reagent and causes electrochemical deposition of zinc in cathode. Wire shaped nano zinc architecture has been formed in cathode during electrochemical process which is the active reagent. Homopropargylic alcohols are synthesized in good yields. After the organic reaction is over aqueous solution containing zinc salts can be reused up to 5th cycle without significant loss of reactivity.

© 2019 Published by Elsevier Ltd.

1. Introduction

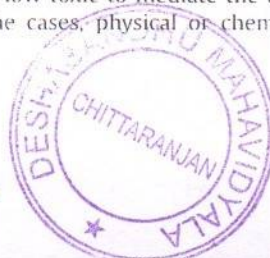
Electrochemical methods can eliminate or dispose the waste materials and recycle the metal reagents [1]. For that reason electrochemical methods are excellent approach to green synthesis. On the other hand, aqueous reactions have been widely studied in order to reduce the use of flammable, toxic, or carcinogenic organic solvents [2]. A combination of aqueous and electrochemical conversion will be an excellent green synthetic approach [1,3].

During the electrochemical process new metal nano architecture is formed that can create interest as the new material. Due to higher surface area of the deposited nano-material reactivity on electrode will also be increased. Nano architecture with particular size and shape can be synthesized by electrodeposition. Because of their applications in nanotechnology material chemists will be interested with these newly synthesized nano architecture. Metallic nano-wires also have huge technological applications like

electronic displays, touch screens, and solar cells [4,5]. To the best of our knowledge, electrochemical synthesis of wire like nano architecture of metallic zinc from aqueous $ZnCl_2$ solution was first reported from our laboratory [6]. Here we wish to report propargylation of carbonyls using electrochemical process when nano wire architecture of pure metallic zinc is formed on cathode. Aqueous $ZnCl_2$ solution is used as starting material for the electrochemical process. In situ formed zinc nano wire is the active reagent for propargylation. Synthesis of homopropargylic alcohols by propargylation of carbonyls is synthetically very important in organic chemistry because of their use as building blocks in natural product synthesis. Metal-mediated propargylation reactions are well-known examples of green aqueous reactions [7,8]. But in most of the cases over stoichiometric amount of metal is used and the corresponding metal salt is generated as waste material. Lots of research has been done on developing metal mediated propargylation reactions in aqueous media. But direct use of $ZnCl_2$ is new and reported for the first time from this laboratory for Barbier type propargylation [6]. Among the successful metals zinc is very cheap and low toxic to mediate the Barbier-type reactions [9]. In most of the cases, physical or chemical activation is necessary.

* Corresponding author.

E-mail address: uroccu@gmail.com (U.K. Roy).





2019 - 20

Sonochemically Synthesized Spin-Canted CuFe_2O_4 Nanoparticles for Heterogeneous Green Catalytic Click Chemistry

Bibhas Mondal,^{†,‡} Mousumi Kundu,[†] Siba Prasad Mandal,[†] Rajat Saha,^{*,†} Ujjal Kanti Roy,^{*,†} Anirban Roychowdhury,^{§,||} and Dipankar Das^{||}

[†]Department of Chemistry, Kazi Nazrul University, Asansol 713340, India

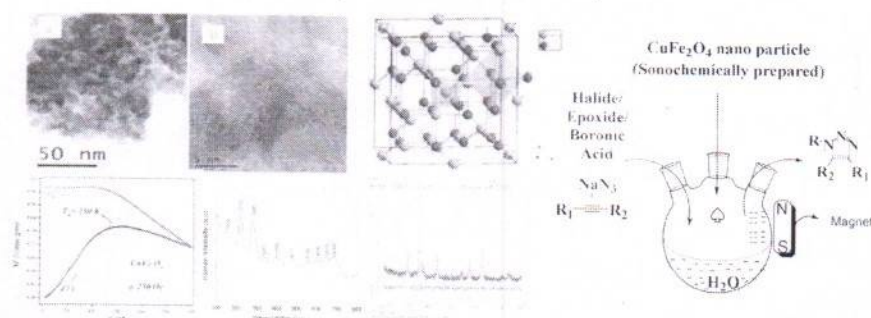
[‡]Department of Chemistry, NIT-Durgapur, Durgapur 713209, India

[§]Department of Physics, Krishnath College, Berhampore 742101, West Bengal, India

^{||}UGC-DAE Consortium for Scientific Research, Kolkata Centre, III/LB-8, Bidhannagar, Kolkata 700098, India

Supporting Information

Catalytic Green Click Chemistry



ABSTRACT: Heterogeneous green catalysis by using magnetically separable nanometal–oxide catalysts has become a subject of prime focus recently. PXRD (powder X-ray diffraction), FESEM (field emission scanning electron microscopy), and HRTEM (high-resolution tunneling electron microscopy) with IR and Raman spectroscopy are applied to analyze the structural and microstructural properties of nanosized (~ 15.3 nm) CuFe_2O_4 synthesized by both sonochemical and mechanochemical processes. The sonochemical process provides a better uniformity of sizes of the nanoparticles (NPs). Rietveld refinement with the PXRD pattern reveals the inverse spinel-like architecture of CuFe_2O_4 NPs. The Raman spectra also indicate the phase purity of the synthesized material. The static magnetic measurements are performed at different magnetic fields and temperature ranges from 300 to 5 K, which confirms the existence of the ferrimagnetic phase mixed with some finer superparamagnetic (SPM) nanophases within the sample. Unsaturated magnetization is observed even at an applied 5 T magnetic field for the presence of spin-canting nature in the partially inverted copper ferrite phases at the surfaces of the nanoparticles. Now, these coupled magnetic CuFe_2O_4 NPs are used as a heterogeneous catalyst for three-component Huisgen 1,3-dipolar cycloaddition click reaction in aqueous media. By this catalyst system, we were able to couple alkyl halide, epoxide, or boronic acid with alkynes efficiently to furnish 1,4-disubstituted 1,2,3-triazoles in excellent yields within very short reaction time. The test for heterogeneity, reusability, and reproducibility of the catalyst has also been performed successfully without prominent decrease in yield up to the fifth cycle.

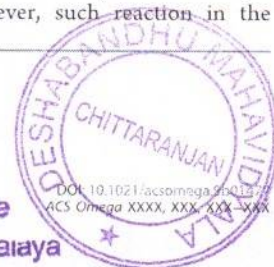
1. INTRODUCTION

Heterogeneous green catalytic click chemistry is very important from several perspectives: (a) green chemistry: the reaction proceeds without using any solvent only in the presence of the catalyst, (b) easy separation: the catalyst can be separated from the mixture by simple filtration, (c) click chemistry: click chemistry provides the maximum conversion.¹ Catalytic click chemistry is a unique approach for the conversion of reactant molecules to a particular desired product in a single step or consecutive steps. Several types of heterogeneous catalysts such as MOFs,² metal nanoparticles (NPs),³ and metal–oxide NPs⁴ are used for such click

chemistry, while usage of magnetically separable spinel ferrites for such application is relatively scarce.⁵ On the other hand, copper-catalyzed azide–alkyne cycloaddition (CuAAC) is an important “click chemistry” reaction which has been extensively applied in chemical biology, medicinal chemistry, and materials science. The CuAAC reaction of terminal alkynes provides a mild and efficient synthesis of 1,4-disubstituted 1,2,3-triazoles. However, such reaction in the

Received: May 21, 2019

Accepted: August 2, 2019



ISSN 22-01-0784

विद्याकाव्येण सप्रसिद्धिः सप्तसिद्धिः एषाम् वाचसायनः काव्यम्

पृथुमान्

वृत्तानि - काव्यम् २०१९

ANURAGH PAPERMAA

आरुणात्मिक पार्थिवाना

वृत्तानि - काव्यम् २०१९

विद्याकाव्येण सप्रसिद्धिः सप्तसिद्धिः एषाम् वाचसायनः काव्यम्



Teacher-in-charge

Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

ISSN No. : 2201-0784

विद्याकाव्येण सप्रसिद्धिः सप्तसिद्धिः एषाम् वाचसायनः काव्यम्

पृथुमान्

वृत्तानि - काव्यम् २०१९

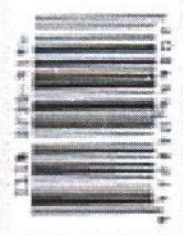
विद्याकाव्येण सप्रसिद्धिः सप्तसिद्धिः एषाम् वाचसायनः काव्यम्

विद्याकाव्येण सप्रसिद्धिः सप्तसिद्धिः एषाम् वाचसायनः काव्यम्

विद्याकाव्येण सप्रसिद्धिः सप्तसिद्धिः एषाम् वाचसायनः काव्यम्

विद्याकाव्येण सप्रसिद्धिः सप्तसिद्धिः एषाम् वाचसायनः काव्यम्

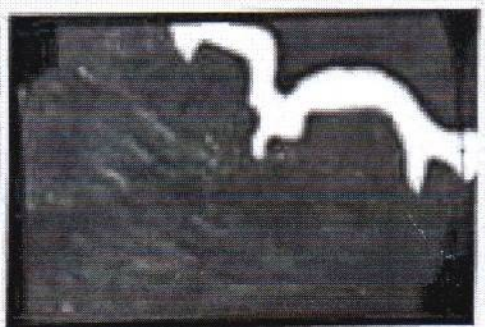
₹ 250.00
Per Issue
₹ 250.00
My Issue



Editor: Anurag Papermaa
Address: Panchsathi, Flat-301, The Vidyapeeth, 330, N.C.C. Road, Bhubaneswar, Odisha-751007
Phone: 9439000000, 9439000000, 9439000000
E-mail: anurag@anurag.com

ANURAG PAPERMAA

आरुणात्मिक पार्थिवाना



वृत्तानि - काव्यम् २०१९

विद्याकाव्येण सप्रसिद्धिः सप्तसिद्धिः एषाम् वाचसायनः काव्यम्

ISSN 22-01-0784

पृथुमान्



সাপকথার নির্মাণে রবীন্দ্রনাথ-

অবনীন্দ্রনাথ : কিছু কথা

বৌদ্ধিক লোককথার উৎসব থেকে বাংলা
সাপকথার এক নতুন সংস্করণের সন্ধান করতে
সেমেছিলেন রবীন্দ্রনাথ, সঙ্গে পেরেছিলেন আকুঞ্চুর
অবনীন্দ্রনাথকে। তাঁরা শুধু সূজন করছিলেন না,
ভাষ্যেই চর্চছিলেন, সন্ধান করছিলেন এরা এক
অসম্পূর্ণ। সেই ক্ষমতার আলোচনার
সেবানীরা চৌধুরী।

পশ্চিম বঙ্গের-কায়রী গ্রামে 'মহিলাগায়ী' গায়ের গানকথার একটি বৈশিষ্ট্য উল্লেখ করে
কোনো যে, 'মিথ্যাকে সঁচি করে কৈলার নাই হল প্রেমজন। আর রোমন্থকের হৃদয়
কশী হল গল্পকথা। এই গল্পকথা করে বৈশিষ্ট্য। সেগুলির মধ্যে অনেক হল, এর
যেটুকু। এই যেটুকু মনে অস্বাভাবিকত্ব হল রাস-গানকথার কিয়ে সুযোগ্য-
দুঃসংগী। এইসব বৈশিষ্ট্য নির্মাণে বিভিন্ন পদ্ধতিক উপলক্ষে সেক্ষেত্রিক বিজ্ঞানজ্ঞানে
পড়ে লাগিয়েছেন।

সাপকথার নির্মাণ এবং চর্চাক্ষেত্র

কায়রী সেক্ষেত্রিকের গ্রামে বৈশিষ্ট্যের আকৃতির একটি অধ্যয়ন লিখ-নির্মিত বৈশিষ্ট্যের
এই প্রকারটির বিভিন্ন উপকরণ নির্মাণে বৈশিষ্ট্যের মধ্যে রয়েছে গল্পে একে জটিল
রীপথে বৈশিষ্ট্য করে ফুটতে চেষ্টাছিলেন। এই প্রকারে অথচই গল্পকথার গায় করা
হয়। সেসময়গো যেসবই উপ উপ লিখ করানায়। বৈশিষ্ট্য বৈশিষ্ট্যে বৃত্তান্তের মধ্যে
সেইসবই বৈশিষ্ট্য উপ উপ লিখ করে সেসময়ে গুণ করে। উপকথার অর্থের একটি
বৈশিষ্ট্যে লিখে উপ উপ লিখ করে লিখ করে...

কুণ্ড কায়রী গ্রামে, লাইট গ্রামে : ... এ সেরা একসঙ্গে গানকথার অধ্যয়ন,
গড়ে উঠে গড়েছিলেন বৈশিষ্ট্যের এক সেরা। অস্বাভাবিক উপ উপ লিখ করে
কায়রী এ সেরা সেরা বৈশিষ্ট্যের কায়রী অর্থের উপ উপ লিখ করে, আর এই উপকথার
গানকথার উপ উপ লিখ করে কায়রী থেকে কায়রী করে লেখা হয়েছে।

এইসময়ই এর উপরে অস্বাভাবিক একটি মতের উপ উপ লিখ : ... এ সেরা সেরা মতের উপ উপ লিখ
কায়রী, আর অস্বাভাবিক উপ উপ লিখ করে লিখ করে, আর অস্বাভাবিক উপ উপ লিখ করে
কায়রী সেরা সেরা বৈশিষ্ট্যের উপ উপ লিখ করে।

বাল্যকালের উপ উপ এই উপকথার উপ উপ লিখ করে শিশুসমাজের উপ উপ লিখ করে
সবিস্তরে গল্পকথার উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে
কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে...

বাল্যকালের উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে
কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে
কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে...

এসময় উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে
কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে
কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে...

কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে
কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে
কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে...

কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে
কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে
কায়রী সেরা সেরা উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে উপ উপ লিখ করে...

CHANGING AGRICULTURAL LAND USE PATTERN IN BIRBHUM DISTRICT : A TEMPORAL STUDY

Palash Kumar Mondal*

ABSTRACT

In any world's agrarian economy based country like India, changes in agricultural land use patterns over time have an impact on its different aspects of agricultural development and sustainability. The present study attempts to identify a decadal change in land utilization and land use pattern in Birbhum district, West Bengal from 2005-06 to 2015-16. The study reveals that an increase in the area under non-agricultural uses, net sown area and the area sown more than once; and besides declines in the area under current fallow to reporting area which all are the clear indications of agricultural growth. The study also indicates that an increase in the area under both food and non-food crops to the net sown area is also a good sign for growth, diversification and sustainability of agriculture.

Keywords : Land Use, Agricultural Growth, Agricultural Diversification and Sustainability.

INTRODUCTION :

The study of land use patterns is the foremost concern to the geographers to discover the trends of ecosystems particularly the relationship between man and their surrounding environment (Tripathi & Vishwakarma, 1988). "Land use pattern is the right and balanced allocation of land between rival claimants" (Stamp, 1969, p. 65), and it deals with the study of problems between altered (by man) and natural land uses (Sharma, 2013).

Simply, land use refers to the exterior exploitation of all occupied and unoccupied land in the temporal dimension of various activities on a specific point of space (Mandal, 1990).

This "leads one back to the village farm and the farmer, to the fields, gardens, pastures, fallow land, forests and to the isolated farmstead" (Freeman, 1968, p. 74).

The utility, functionality, serviceability and acceptability of land use is continuously changing as a result of changes in magnitude and pattern of human activities and growing demand.

Nevertheless, proper study and investigation of land use are essential for sustainable agricultural development. Indeed, agricultural land use is the result of the dynamic interaction between man and their surroundings for crop production (Hahvey, 1966; Hassan et al., 2016; Weng, 2000). In addition to various natural factors, agricultural land use is also keeping pace with various socio-economic and dynamic technological factors (Kanianska, 2016; Li et al., 2016; Yesuph & Dagneu, 2019). Farmers' decisions regarding the choice of crop and methods of production are an important concern in this perspective (Kinuthia et al., 2018; Simola, 2019). In the study on land use change, it is crucial to determine the relationship between land use changes and its driving forces which provides essential information about land use planning and sustainable management of resources (Veldkamp & Fresco, 1996). These driving forces are generally influenced by the existing environmental conditions and socio-economic setting which lead to changes in land use through the manipulation of the biophysical conditions of the land (Turner et al., 1995).

*Assistant Professor in Geography, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan



UGC-CARE LIB

UGC-CARE LIB

You searched for 248 2497 2016 2017 1

Search: [input field]

Sl.No.	Journal Title	Publisher	ISSN	E-ISSN	Action
1	Shodh Satra (Prasthna)	Shodh Satra Educational and Research Foundation	248 2497	NA	View

Showing 1 to 1 of 1 entries

Previous Next

A Comparative Study on Temporal Changes in Lulc Between Darjeeling District and West Bengal

Palash Kumar Mondal,

Assiatant prof. of Geography, Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan

E-mail: palashgeography@gmail.com


Abstract

Land use is the surface utilization of all developed and vacant land on a specific point, at a given time and space. The changes in land use and land cover (LULC) of a region take place by the interaction of human activities and physical setting over time. Due to industrialisation, urbanisation and immense demographic pressure, land is becoming a scarce resource. So, the study on land use and land cover is an urgent necessity at present for economic and environmental sustainability of a country. The present paper adequately demonstrates the utility of Remote Sensing and GIS Data to detect and record the land use and land cover of the region and its changes over time. Here, satellite data (Resourcesat-1, LISS-III) are used for different sensor for the year 2005-06 to 2011-12 to detect the land use and land cover changes of Darjeeling District and West Bengal. Hence, information on land use and land cover change is essential for their optimal use as well as for successful reflection, planning and implementation of land use scheme to meet the increasing basic demands of growing population and for raising welfare. The study reveals that built-up area is an important land use pattern because of its contrast increases between the district and state. A positive change of agricultural land for the state and district also is the good sign of agricultural growth. The negative change of the proportion of land area committed to forest, grazing and water bodies is also of concern for the district and state also.

Key Words: LULC, Remote Sensing, GIS, Urbanisation, Demographic Pressure, Detection


Introduction

The anthropogenic activities have significantly changed the natural landscape of the earth with the passage of time (De *et al.*, 2014). A change in land use and land cover is thus being increasingly recognised as critical factors for influencing the global change (Sharma *et al.*, 2008). However, the terms 'land use' and 'land cover' are seemingly used in the same sense, however, there is a slight difference between them. Land use is the functional dimensional use of land for different human purposes and economic activities and is often shaped by human, socio-economic and political influences (Sharma *et al.*, 2008), while land cover may be defined as the bio-physical coverage of the earth surface. Study of LULC change is needed to recognise the prior practices, present land use pattern and also the


Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan



[Home](#)
[UGCC](#)
[Search](#)


SAVITRIBAI PHULE PUNE UNIVERSITY

[Home](#)
[UGCC](#)
[Search](#)

[UGCC CARE LIST](#)

Search:

Search Results for: 2391-3114 Total Results: 1

Sl. No.	Journal Title	Publisher	ISSN	E-ISSN	Action
1	Studies in Indian Place Names	The Place Names Society of India	2391-3114	NA	Discontinued from April 2020

Showing 1 of 1 entries

Copyright © 2020 Savitribai Phule Pune University. All rights reserved. | Disclaimer

11:48 AM 12/31/2020

Mahatma Gandhi's View on Gram Swaraj and Panchayati Raj System in India

2019-20

Sanchita Hazra

Research Scholar, Department of Political Science, University of Bankura, West Bengal, India.

E-mail: sanchita.dbm@gmail.com

Abstract: "India lives in village. The village should grow to make India global power in the world as it is a leader in spiritual sphere"----

M.K. Gandhi

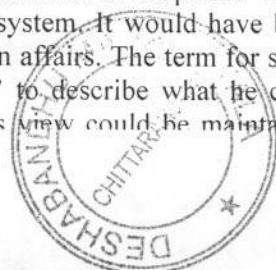
Mahatma Gandhi firmly believed in democracy in grassroots. The 73rd amendment to the constitution is a step in the right direction to meet the general level of desire of the public. He advocated decentralized governance to participate in the formation of a nation of the poor and at the same time to exclude the state's intervention in the routine life of the people. Gandhiji wanted to see the villagers as the "Bengali garden of Eden" from "black necklace". During his non-cooperation movement the Panchayet Raj system acquired more significance. It aims to replace the court by the panchayet. He believes that real democracy can be realized by Panchayats and some people do not realize through the Panchayat and not sitting by the few men in the center. Ganges announced the hard work of the villagers for the development of rural areas. The people of the village should be aware of "miracles, non-violence, truth, arrogance, intellectualism, lack of access, physical labour, control of wealth, fearlessness and equal respect of all religions." He believed in a proper institutional framework such as self-reliance. The women self-help group is a good example in India. Panchayats should have basic unit of democratic decentralization and higher units should cooperate with them. Nowadays people are very fast in competitive environment. Today, multinational companies have entered India; therefore, the government has to be encouraged to take care of rural and urban populations. The new panchayati raj system aims to decentralize governance at the grassroots level and to empower rural men and women. The new panchayati raj system was very important. The results of the global movement for the liberation of the new government and the whole state system of the new panchayet raj and this is one of the new policy options of Rajiv Gandhiji, which can connect the political and economic activities of our society with the activities of the developed society. The decentralization of power or the empowerment of the people or the new system of decentralization of power is to make people commit to the simplicity of man or the removal of people and the role of a helper from the role of a provider and its role and function equivalent. The government will be reduced and in the present context the government will have to rearrange the role. The new panchayat raj will be aware of the full impact of the new system to be vibrant and active. New systems realize more power than power and authority.

Key Words: Mahatma Gandhi, 73rd amendment of constitution, gram swaraj, panchayati raj system, role and function.

1. INTRODUCTION:

Mahatma Gandhi strongly believed in democracy in grassroots. Gandhiji was a complex, multi-dimensional personality. He was a religious saint, a politician, a patriot and a nationalist, and an economist and a great freedom fighter. He was one of the most profound and original thinkers of the modern era. He has expressed his views in most cases of his life and what he said is still significant. The 73rd Amendment to the Constitution is a step in the right direction to meet the general level of public will. He supported the decentralized regime for the formation of a nation of the poor and at the same time to exclude state interference in regular public life. Gandhiji wanted to see villagers as "Bengali garden of Eden" from "black necklace". During his non-cooperation movement the Panchayet Raj system gained more significance. The goal of the panchayat to replace the court, he believed that real democracy can be realized by Panchayats and some people do not realize through the Panchayat and do not sit with some people in the center. Gandhiji announced the hard work of the villagers for the development of rural areas. The people of the village should be aware of "miracles, nonviolence, truth, pride, intellectualness, lack of access, physical labour, wealth control, fearlessness and equal respect for all religions". He believed in a proper institutional framework that women self-reliant in self-reliance is a good example in India. Panchayats should have basic unit of democratic decentralization and higher units should cooperate with them. Mahatma Gandhi promoted Panchayat Raj as the foundation of India's political system. It would have been a decentralised form of Government where each village would be responsible for its own affairs. The term for such a vision was Gram Swaraj ("village-self-Government"). He preferred the term 'Swaraj' to describe what he called true democracy. This democracy based upon freedom. Individual freedom in Gandhi's view could be maintained only in autonomous self-reliant communities that offer

Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan





PROBLEMS AND PROSPECTS OF GRAM SWARAJ AND PANCHAYATI RAJ
SYSTEM IN POST INDEPENDENCE ERA: THROUGH THE LENSES OF
GANDHI

2019 - 20

Sanchita Hazra

Assistant Professor of Political Science
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan, Paschim Bardhaman, West Bengal

Abstract

In the present era of globalization one cannot be kept in isolation. There are number of linkages. The small places that is remote /rural areas of the country are linked with region / state /nation and with the world. Thus the concept of 'Global Village' by Marshall McLuhan(1960) was intended to account for new cultural situation and the world had become one place. And in this line of changing situation in our country the village panchayat play a key role. Gandhiji wanted to share political power in the Indian state's villages. To describe how he had described true democracy, the word 'Swaraj' can be quoted. This democracy is based on freedom. He dreamed of the village republic during the tenure of Independent India. He said, "Panchayat Raj represents true of democracy realized. In matters of social reconstruction no amount of administrative innovation is a substitute for intelligent public participation. Agencies skilfully devised by the Welfare State may founder on the rocks of public apathy and ignorance. After the independence Gandhi's concept of Swaraj was not included in the Indian constitution. Political, social and industrial organizations of India are generally "top down" instead of "bottom up". Gandhi focused that villages should be organized in the form of countless oceanic cycles for political and industrial life. There has been a shift of emphasis in our thinking about the Panchayati Raj. After independence, in the 1950s, the policy makers and intellectuals thought off panchayati Raj as a necessary step towards 'Development Administration' and the 'Process of Nation Building'.

Key Words : Gandhi, Gram Swaraj, Nation Building, Panchayatiraj , Problem and Prospects , New Panchayatiraj System

Introduction:

In the present era of globalization one cannot be kept in isolation. There are number of linkages. The small places that is remote /rural areas of the country are linked with region / state /nation and with the world. Thus the concept of 'Global Village' by Marshall McLuhan(1960) was intended to account for new cultural situation and the world had become one place. And in this line of changing situation in our country the village panchayat play a key role. The mainstay of our country is agriculture which are fostered in village /rural areas. Mahatma Gandhi strongly believed in democracy grassroots. Gandhiji was an ideal, multi-faceted personality. He was a religious saint, a politician, a patriot and a nationalist, and an economist and a great freedom fighter. He was one of the most profound and original thinkers of the modern era. He had expressed


Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan



2019-20

ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

अप्रैल-सितम्बर (संयुक्तांक) 2019



हमारा कथा - समय - 1



₹50/-



समय रचती कहानियाँ

■ डॉ. कल्पना पंत

सृजनात्मक लेखन कलागत अभिव्यक्ति की उत्कृष्ट शैली है। उपन्यास, नाटक, कहानी जैसी तमाम सृजनात्मक विधाएँ यथार्थ और कल्पना के समझन का महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। वस्तुतः सृजन की इस प्रक्रिया में स्त्री लेखन का अपना विशिष्ट पक्ष है। विधागत रूप से कहानी जीवन के किसी एक विशिष्ट पहलू, घटना अथवा मुद्दे को कम स्पेस में स्पष्टतः अभिव्यक्त करने की सशक्त विधा है। स्त्री लेखिकाओं ने अपनी कहानियों के जरिए जीवन के प्रत्येक पहलू से सम्बंधित विभिन्न मुद्दों एवं समस्याओं को सहज एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति दी है। इस दृष्टि से निर्मला भुराडिया कहानियाँ उल्लेखनीय हैं।

पितृसत्तात्मक सामाजिक ताने-बाने के भीतर स्त्री जीवन से संबंधित कई ऐसे छोटे-बड़े पहलू हैं जिन्हें अमूमन नजरअंदाज कर दिया जाता है या तबज्जो नहीं दी जाती है, जबकि स्त्री जीवन के यही मुद्दे उनके जीवन की दशा और दिशा तय करते हैं। निर्मला भुराडिया के कहानी संग्रह 'मत हँसो पद्मावती' में संग्रहित कहानियों को यदि सूक्ष्मता से परखा जाए तो ये कहानियाँ स्त्री जीवन के इन्हीं छोटे-छोटे मुद्दों को बेहद बारीकी से बयान करती हैं। पितृसत्तात्मक मान्यताओं ने समाज की मानसिकता को इस कदर अपने अनुरूप निर्मित किया है कि अपराध अथवा गलती पुरुष की ही क्यों न हो किन्तु कटघरे में सदैव स्त्री को ही खड़ा किया जाता है। निर्मला जो की कहानी 'मत हँसो पद्मावती' इस पक्ष को बखूबी बयान करती है। पत्नी के रहते हुए राणा दूसरी स्त्री के प्रति आकृष्ट है। वह अपना सुख-दुख अपनी प्रेयसी से साझा करता है, किन्तु राणा की पत्नी अकेलेपन, कुंठा और ऊबयुक्त जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। राणा को पुनः अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वह कभी खूबसूरत दिखने की कवायद करती है तो कभी सहानुभूति अर्जित करने के लिए आत्महत्या का प्रयास।

पुरुष का एकतरफा मनमाना व्यवहार कोई नई बात नहीं। चूँकि निर्णय का अधिकार पुरुष के पास है इसीलिए स्त्री-पुरुष अथवा पति-पत्नी के संबंध में सर्वोपरि स्थिति भी पुरुष की ही है। इसीलिए पति द्वारा दूसरी स्त्री से संबंध बनाने और धोखा देने के कारण स्त्री जीवन तनाव, अविश्वास और बेवफाई से उपजी मानसिकता का अनंत संजाल ही क्यों न बन गया हो किन्तु सामाजिक दृष्टि पितृसत्तात्मक मानदंडों की ही आग्रही रही है। राणा के अवैध संबंधों के चलते जब उनकी पत्नी अवसाद की स्थिति में चली गयी तब भी लोगों ने यही कहा 'बेचारे राणा साहब। उन्हें दूसरी शादी कर लेना चाहिए। या फिर कोई...' (मत हँसो पद्मावती, पृ.17) स्त्री-पुरुष संबंधों के प्रति पितृसत्ता का आग्रह आज भी कमोवेश इसी रूप में संचालित दिखाई पड़ता है।

लड़की के विवाह को उसकी शिक्षा के मुकाबले हमेशा तबज्जो दी जाती रही है। इसीलिए तलाकशुदा होने या विधवा हो जाने पर उनका जीवन दुरुह हो जाता है। हमारी सामाजिक व्यवस्था का ताना-बाना कुछ इस प्रकार निर्मित है कि ऐसी स्त्रियों का ही नहीं अपितु उनके बच्चों का जीवन भी अधिक सामंजस्यवादी, अभावग्रस्त और समझौतावादी हो जाता है। कहानी 'सोनू के लिए बन्दूक जा तो रही है' तथा 'सलामत रहे नन्हें का संसार' जैसी कहानियों के जरिए लेखिका ने इस मुद्दे को बड़ी गंभीरता से कथा में पिरोया है। 'सोनू के लिए बन्दूक जा तो रही है' कहानी में वैधव्य के थपेड़े झेलती हुई मायके में



निर्मला भुराडिया

19-20

ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

अप्रैल-सितम्बर (संयुक्तांक) 2019



हमारा कथा - समय - 1



₹50/-

लमही


इस अंक में

वर्ष: 11-12 • अंक: 4-1 • अप्रैल-सितम्बर (संयुक्त) 2019

पड़ताल II

● स्त्री कथा और अनुभवजन्य आख्यान	-पंकज पराशर	06
● ममता कालिया : जंजीरें तोड़, अँधेरे से बाहर निकलती औरत	-ओम प्रकाश मिश्र	10
● सूर्यबाला : सामाजिक विसंगतियों से जूझती कहानियाँ	-डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह	13
● मृदुला गर्ग : उनका हकीकत और जोखिम भरे यथार्थ से गर्भनाल का रिश्ता है	-प्रज्ञा पाण्डेय	17
● सुधा अरोड़ा : भूमंडलीकरण के संवेदनात्मक आयाम उकेरती कहानियाँ	-ओमप्रकाश मिश्र	20
● नासिरा शर्मा : विस्तृत वितान की कहानियाँ	-विजय शर्मा	23
● शीला रोहेकर : कथारस के नये आस्वाद की कहानियाँ	-उपासना	29
● नमिता सिंह : मजबूत स्त्री और उसकी मजबूत छवि की प्रस्तुति	-मनीषा जैन	32
● दीपक शर्मा : कस्बापुर का चमड़े का अहाता है लेखिका का कथा जगत	-मधु बी. जोशी	35
● सुमति सक्सेना लाल : सूक्ष्म अंतर्द्वंद्व की रचनाकार	-श्रुति	39
● मैत्रेयी पुष्पा : समकालीन स्त्री-विमर्श के आइने की कहानियाँ	-अनुराधा गुप्ता	42
● उषा किरण खान : यहाँ स्त्रियाँ जीवन संघर्ष की रीढ़ हैं	-प्रज्ञा पाण्डेय	48
● मधु कांकरिया : मानवीय गरिमा और संघर्षों की कहानियाँ	-उषा राय	51
● आशा प्रभात : यथार्थबोध से जुड़ा है कहानियों का विषय	-डॉ. स्नेहा सिंह	54
● सुषमा मुनीन्द्र : दरकते प्रेम की कहानियाँ	-साधना अग्रवाल	57
● सारा राय : यथार्थ की भीतरी तहों तक पहुँचती दृष्टि	-शंभु गुप्त	60
● गीतांजलि श्री : कहानियों में वैकल्पिक यथार्थ की खोज	-शंभु गुप्त	63
● अलका सरावगी : कहानी की तलाश जारी है	-विजय शर्मा	67
● लवलीन : मर्यादित स्त्री छवि को तोड़ती कहानीकार	-डॉ. पूर्णिमा मौर्या	71
● वंदना राग : विविध रंगों में रंगी कहानियाँ	-वंदना पाण्डेय	75
● मनीषा कुलश्रेष्ठ : कहानियों में स्त्री-अस्मिता के स्वर	-मीना बुद्धिराजा	78
● महुआ माजी : एक अलग आस्वाद की कहानियाँ	-संजय कृष्ण	81
● जयश्री राय : निर्दोष होने से बड़ा कोई दोष नहीं...	-सौरभ शेखर	85
● जया जादवानी : कहानी की नई इबारत लिखती हैं	-ब्रजेश	87
● वंदना देव शुक्ल : अनुभवों के नए सीमान्त की कहानियाँ	-डॉ. अंकिता तिवारी	90
● उर्मिला शिरीष : निर्वासित यथार्थ की कहानियाँ	-आनंद कुमार सिंह	94
● रजनी गुप्त : समय के ताप से मुठभेड़ करती कहानियाँ	-शशिभूषण मिश्र	99
● निर्मला भुराड़िया : समय रचती कहानियाँ	-डॉ. कल्पना पंत	103
● अल्पना मिश्र : जीवन के खुरदुरे यथार्थ की कहानियाँ	-डॉ. कल्पना पंत	105
● नीलाक्षी सिंह : यथार्थ का नया व्याकरण रचती कहानियाँ	-ब्रजेश	108
● प्रत्यक्षा : अनबूझ मोड़ से भी राहें गुजरती हैं	-अल्पना सिंह	111
● कविता : उजास की कथाकार	-श्रुति	114
● किरण सिंह : देर तक बेचैन रखने वाली कहानियाँ	-पंकज सुबीर	117
● आकांक्षा पारे काशिव : जिंदगी से टहल कर निकली हुई कहानियाँ	-पंकज सुबीर	124
● ज्योति चावला : खामोशी, सन्नाटा और अँधेरे को शकल देती कहानियाँ	-मृत्युंजय पाण्डेय	130

अप्रैल-सितम्बर : 2019


Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan





जीवन के खुरदुरे यथार्थ की कहानियाँ

डॉ. कल्पना पंत

साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी लेखन का विशिष्ट स्थान है। कहानी आवश्यकतानुरूप अपने छोटे या विस्तृत फलक में सम्पूर्ण विषय को समेटने की क्षमता रखती है। चूँकि कहानी में जितना महत्व कथातत्व अथवा मूल मुद्दे का होता है उतना ही महत्व कहन शैली का भी है। इसीलिए कहानी अर्थ गाम्भीर्य के साथ-साथ रोचकता को भी समेटे रखती है, जो उसके कैनवास को मूल मुद्दे से भटकने से बचाती है। स्त्री लेखिकाओं में भी स्त्री जीवन की तमाम समस्याओं को उजागर करने, उन पर विचार किये जाने हेतु कहानी विधा को अपेक्षाकृत अधिक सहज पाया है। इस दृष्टि से अल्पना मिश्र की कहानियाँ बहुआयामी एवं प्रासंगिक हैं।

समकालीन कहानी लेखन में कहानीकार अल्पना मिश्र की कहानियाँ जीवन के विभिन्न पहलुओं को विस्तृत फलक पर रेखांकित करती हैं। पत्रात्मक शैली में लिखी गयी उनकी कहानी 'सुनैना तेरे नैन बड़े बेचैन' एक बेहतरीन कहानी है। परिवर्तन जीवन का अदृश्यभावी नियम है। उम्र के हर पड़ाव में परिवर्तन अपना रुख स्वयं तय करते हैं। इस दृष्टि से स्त्रियों के सन्दर्भ में विवाह कई बार उनके अस्तित्व को एक नई दिशा प्रदान करता है तो अधिकांश मर्तबा नये रिश्ते बनाने, समझने-समझाने और एडजस्ट करने में ही सारी ऊर्जा और समय व्यय हो जाता है। विवाहपूर्व जो लड़की अकेले सबकुछ अपनी मुठ्ठी में कर लेने की उड़ान भरती थी, सर्वत्र व्याप्त दोहरे मानदंडों को बदल देने की बैचैनी से ओतप्रोत थी और अपनी छोटी बहनों की आदर्श थी, विवाह पश्चात् वही लड़की कहीं गुम हो गयी है। प्रगतिशील विचारों से युक्त 'दुनिया को दुरुस्त' करने की चाह रखने वाली अपनी बड़ी बहन से छोटी बहन प्रश्न करती हुई कहती है "शादी क्या हुई, सब कुछ इस तरह बदल गया आपका। भावहीन सूनी आँखें लिए कहीं देखे जा रही हैं आप।" यह कहानी मात्र अल्पना और अर्चना की नहीं है बल्कि यह उन करोड़ों स्त्रियों की भी कहानी है जो विवाह पश्चात् वैवाहिक संबंधों के ताने-बाने के भीतर समझौतावादी जीवन व्यतीत करते हुए, अपने अस्तित्व की सार्थकता तलाशती हुई कहीं गुम हो जाती हैं। वास्तव में यह कहानी 'सब कुछ बदल डालने' की भावपूर्ण और अर्थपूर्ण बेचैन आँखों के 'भावशून्यता' में तब्दील हो जाने की कहानी है।

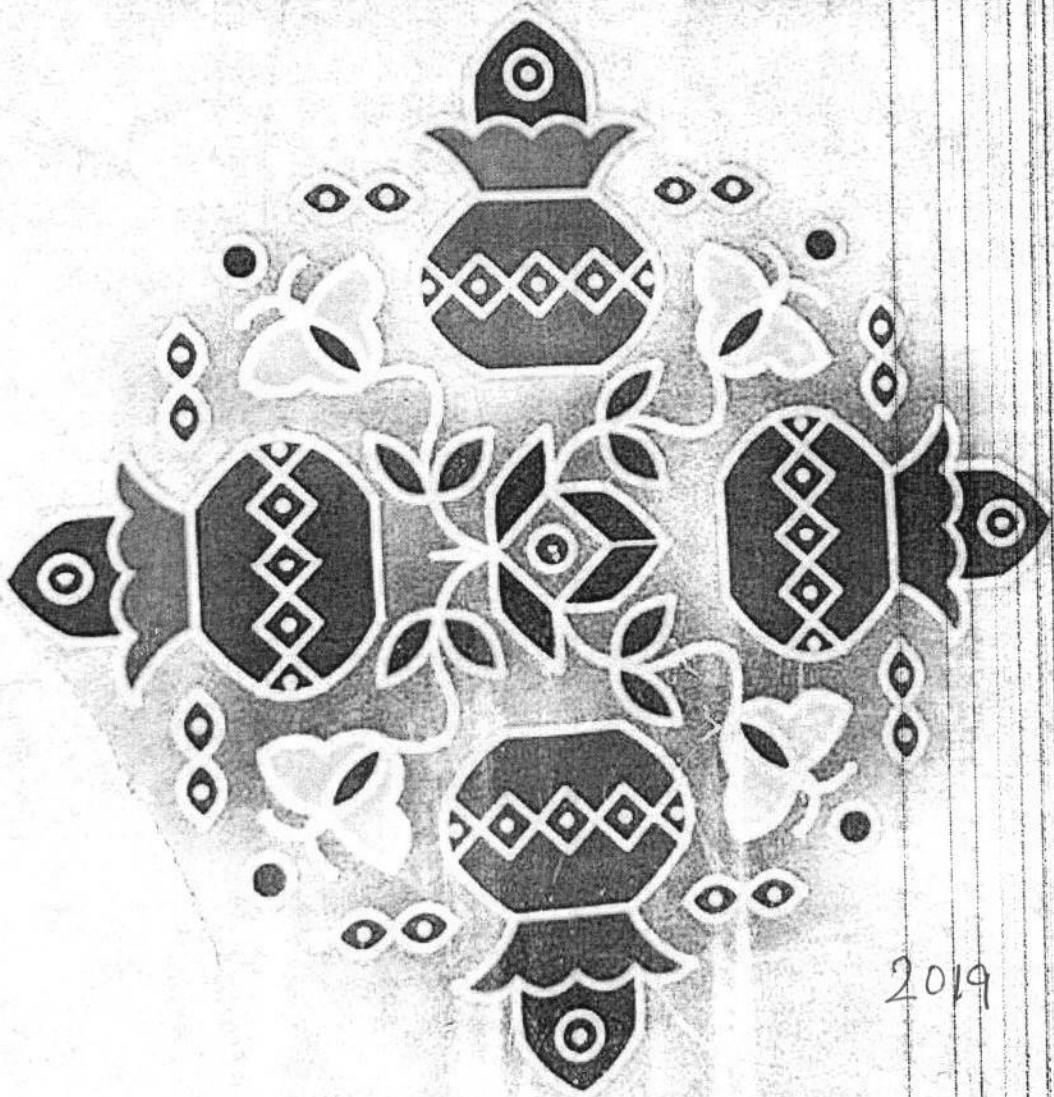
स्त्रियों के सन्दर्भ में 'घरेलू हिंसा' एक गंभीर मसला है। इसके खिलाफ कई कानून बनाये जाने के बावजूद आज भी इस पर रोक लगा पाना संभव नहीं हुआ है। वर्तमान में लोकतंत्र का चौथा स्तंभ मीडिया अत्यंत शक्तिशाली हो गया है और उसकी आम जनता तक पहुँच सहज हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप आए दिन ऐसी घटनाओं की यथार्थ, गंभीर और हृदयविदारक रिपोर्टिंग देखने को मिलती हैं। अल्पना मिश्र की कहानी 'उसकी व्यस्तता' में इस मुद्दे को बेहद सटीक ढंग से उठाया गया है। विवाहपूर्व जो माता-पिता अपनी शर्तों पर जीने वाली लड़की के व्यवहार पर गर्व करते हैं, विवाह के पश्चात् वही माता-पिता उसे परिवार को बचाए रखने, सहन करने, एडजस्ट करने और एक 'समझदार औरत' बनने की सलाह देते हैं। आखिर यह दातरफा व्यवहार क्यों? क्या औरत केवल लेन-देन की वस्तु है? या फिर केवल उपभोग की सामग्री भर, जिसकी अपनी कोई इच्छाएं नहीं हैं। मीडिया में आए दिन औरतों का मारने-पीटने, घर में कैद कर रखने, बलात्कार और यौन शोषण जैसी रिपोर्टिंग कुछ देर के लिए लड़कियों के प्रति संवेदनशीलता जगाती हैं, बचन करती हैं, फिर इसे लड़कियों की नियति मानकर भुला दिया जाता है। जो औरतें इन भयानक हादसों से किसी तरह निकल आईं, उन्होंने अपनी दास्तों मुनाई। हालांकि मीडिया में दिखाई जाने वाली ये तस्वीरें कुछेक औरतों की ही कहानियाँ हैं, न जाने कितनी औरतें न तो भाग पाती हैं न समाज और मायके वाले उनका साथ देते हैं, न ही मीडिया की सनसनी रिपोर्टिंग ही सामने आती है। स्त्रियों से सम्बंधित बेहद गंभीर समस्या को अल्पना जी ने अपनी कहानी के जरिए विस्तृत फ़्रम में दर्शाया है।

निर्णय लेने की अधिकारसम्पन्नता के प्रश्न को सूक्ष्मता से रेखांकित करती है कहानी 'इस जहाँ में हम'। आर्थिक सक्षमता 'स्त्री मुक्ति' की दिशा में पहला



अल्पना मिश्र

हिन्दी साहित्य विविध आयाम



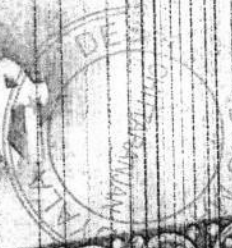
2019

प्रथम खंड

संपा.

ड. सत्य प्रकाश तिवारी

Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan



शरतचन्द्र के उपन्यासों में नारी-मुक्ति संघर्ष

डॉ. जोतिमय बाग

असिस्टेंट प्रोफेसरा, देशबंधु कॉलेज, चित्तरंजन, पश्चिमबंग, भारत



शरतचन्द्र ने अपने समय में समाज की सामंती नियमों से घिरा हुआ पाया। सारी रूढ़ प्रवृत्तियां समाज को पतन की ओर ले जा रही थीं। जातिवाद, अंधविश्वास, स्त्री-पुरुष भेद-भाव आदि सभी अपना प्रभाव बिखेर रहे थे। सामंती समाज में नारी एक बंदिनी माना थी। खुले आसमान में सांस लेना तो दूर वह पारिवारिक जीवन में भी विशृंखलित होकर बिखर गयी थी। पर्दा प्रथा, और अशिक्षा ने तो नारियों के मानसिक विकास में भी रोक लगा दी।

जब शरतचन्द्र ने बांगला साहित्य में पदार्पण किया, तब यूरोप में नारी, अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत थी। नव-जागरण की चेतना वहां की नारियों पर साफ देखी जा रही थी। कैथलिक चर्च के विरुद्ध प्रोटेस्टेन्ट आंदोलन जोर पकड़ चुका था। नारी-मुक्ति संघर्ष पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। निश्चित ही यहां के आंदोलनों से भारत भी प्रेरणा ले रहा था। नवजागरण की चेतना से प्रभावित एक वर्ग संघर्षरत था। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, बंकिमचन्द्र राममोहनराय, माइकेल मधुसूदन आदि नामों का उल्लेख इस संदर्भ में किया जा सकता है। बंगाल के नवजागरण से यहाँ सदियों से दबी-कुचली गयी नारियों की मुक्ति संघर्ष के लिए बल मिला। राममोहन राय ने पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर 'ब्रह्म समाज' की नींव रखी। स्वयं राममोहन राय बाल-विवाह, बेमेल विवाह, बहु विवाह आदि के प्रबल विरोधी तथा विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि के प्रबल समर्थक थे। बंगाल के शिक्षित मधुसूदन भी अब थोड़े-थोड़े जाग्रत हो रहे थे और नारी-शिक्षा की आवश्यकता को समझ रहे थे। साथ-साथ सामाजिक मुक्ति की आवश्यकता को भी समझा। उन्होंने आंदोलन की एक संगठित रूप प्रदान किया। छोटे-छोटे अधिकारों के लिए संघर्षरत आंदोलनकारियों को उन्होंने संगठित कर राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन से जोड़ दिया और स्वाधीनता आंदोलन की एक व्यापक अर्थ प्रदान किया।

भिवानी शोध पथ

2019

प्रधान सम्पादक
विनोद कुमार शर्मा

सम्पादक
डॉ. नरेश कुमार सिहाग


Teacher in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan



अंधायुग : नाटक का पुनर्पाठ

-डॉ. ज्योतिमय

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, देशबंधु महाविद्यालय, चित्तरंजन।

आचार्य भरतमुनि ने नाटक को पंचम वेद कहते हुए उसे तीनों लोकों के म
का अनुकरण से जोड़ते हैं। आधुनिक अर्थों में नाटक को एक खेल (मंचीकरण)
अर्थों में भी समझा जाता है। परन्तु यह कोई साधारण क्रीडा नहीं है। इसमें क
धर्म का समावेश है, तो कहीं ज्ञान का, कहीं शांति तो कहीं हास्य, कहीं युद्ध है तो क
काम। पौराणिक युग से अगर संदर्भित होना चाहे तो यह (नाटक) खल आचरण
सुधार कार्यों की भी व्यवस्था करता है। यदि दुर्निति, धृष्टता, मूर्खों की मूर्खता
विलासप्रियता, आदि दुष्प्रवृत्ति का संज्ञान भी लेता है।

नाटक शब्द की उत्पत्ति 'नट्ट' धातु से हुयी है, जिसका तात्पर्य नृत्य से है
अर्थात् यह काफी अवयवों को अपने में संजोए हुए है क्योंकि, इसमें गीत है, संगीत है
कथा (जव तल) है, गाथा है, काव्य है, और गद्य भी। अपने प्रत्येक उत्थान में नूतनता
लिए यह आज पराकर्षण की दहलीज पर दस्तक दे रहा है। निश्चित समस्त विधाओं
का जनक नाटक-नट्ट- 'नटराज' की ही तरह समस्त कलाओं का भी नटराज है।
अतः यह (नाटक) जितना नवीन है, उतना ही पौराणिक भी।

अंधा युग नाटक पौराणिक कथाओं पर आधारित नयी सभ्यता को व्यक्त
करती एक 'काव्य-गाथा' हैं। अंधायुग में काव्य तत्व और रूपक तत्व का मणि-
कांचन संयोग हुआ है। काव्य मानव के जीवन के रागतत्व को मूर्त करता है और
नाटक तत्व बाह्य जीवन के संघर्षों को दर्शाता है। भारतीय साहित्य में नाटक और
नाटक में काव्य का होना स्वतः सिद्ध है। प्रशाद का सम्पूर्ण नाट्य साहित्य इसका
उदाहरण है। प्रसिद्ध लेखक विलियम नाइट नाटक में विम्बों के कार्य व्यापार को ही
स्वीकारते हैं। यहाँ तक की 'मिलर' और 'इलियट' भी नाटक में काव्य तत्वों क्रमहत्व
को स्वीकारते हैं।

**Right to Education and Its
Infringement in India with Special
Reference to School Dropout**

By
Sanchita Hazra

h
Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan



ND
NEW DELHI PUBLISHERS
New Delhi, Kolkata

Right to Education and Its Infringement in India with Special Reference to School Dropout by *Sanchita Hazra* published by New Delhi Publishers, New Delhi.

© Publisher

Edition: September, 2020

ISBN: 978-93-91012-12-0

All rights reserved. No part of this book may be reproduced stored in a retrieval system or transmitted, by any means, electronic mechanical, photocopying, recording, or otherwise without written permission from the publisher and author.



NEW DELHI PUBLISHERS

Head Office: 90, Sainik Vihar, Mohan Garden, New Delhi - 110 059
Corporate Office: 7/28, Room No.-208, Vardaan House, Mahavir Lane, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002
Branch Office: 216, Flat-GC, Green Park, Narendrapur, Kolkata - 700103
Tel: 011-23256188, 011-45130562, 9971676330, 9582248909
E-Mail: ndpublishers@rediffmail.com/[gmail.com](mailto:ndpublishers@gmail.com)
Website: www.ndpublisher.in

আন্তর্জাতিক
পাঠশালা

২০১৭-১৮

জানুয়ারি- জুন ২০২০



উদ্বাস্তু অভিবাসন

Teacher-in-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan



মহামারি



মহামারি

আধুনিক সাহিত্যে মহামারি চর্চা:

জ্যাক লন্ডন থেকে সত্যজিৎ রায়

কথাসাহিত্যের মানচিত্রে মহামারি আর অতিমারির ছবি
বিশ শতাব্দীর শুরু থেকেই। বিদেশীয় সাহিত্য থেকে দেশীয় সাহিত্যে
তার বিবিধ পন্থানির কথা কিয়ে পোনালেন **সেকালের ঠোঁটুঠী**।

চক্ৰ কল ফক জ্বলেটে ত্রেণ উপন্যাসটি নিয়ে। এটি ১৯১২ সালে প্রকাশিত ঔপন্যাসিক জ্যাক লন্ডনের লেখা একটি উপন্যাস, যেটি আধুনিক সাহিত্যে অনির্ভরিত মহামারিকেন্দ্রিক উপন্যাসের একটি নির্দিষ্ট উদাহরণ। 'শ্রেত তেথ' - এই মহামারিতে বেঁচে যাওয়া কয়েকজনের মধ্যে একটি চরিত্র জেমস হ্যাওয়ার্ড শিথ ওয়াকে 'গ্রনসার' - খিনি পেশায় ছিলেন একজন ইংরেজ অধ্যাপক। ২০৭০ সালে, সেই ভয়াবহ মহামারির প্রায় ছ'ট বছর পর, তিনি তাঁর লন্ডনের সেই মহামারি সম্পর্কে তাঁর অভিজ্ঞতা এবং ভয়ানক অভিজ্ঞতার কাহিনী জন্মিয়েছেন। সেই ভয়ানক মহামারির কালে খণ্ডে খণ্ডে সারা বিশ্বে ছড়িয়ে পড়েছিল। সেইসঙ্গে ছড়িয়ে পড়েছিল যুদ্ধের প্রতি জনগণের এক অস্বাভাবিক ভয়। বিভিন্ন বিষয় নিয়ে তৎকালীন সমাজের ভিন্নধর্মী প্রতিক্রিয়াও তিনি তাঁর স্মৃতিস্মারক তুলে ধরেছেন। যদিও এটি এক শতাব্দীরও বেশি আগে প্রকাশিত, তবুও জ্বলেটে ত্রেণ সময়সাময়িক মানসিকতার উদ্ভাবনকেই প্রাসঙ্গিক করল এটি আধুনিক পাঠকদের বিশ্বব্যাপী মহামারির ভয় সম্পর্কে একটি বাস্তব অনুভূতি দান করে।

মহামারিকেন্দ্রিক সাহিত্যের ঐশ্বর্যের জিহ্বিতে বিশ্বসাহিত্যে লন্ডনের এই উপন্যাস একটি সক্রমক গোপের প্রতি মানুষের উদ্ভক্তি তুলে ধরেছে। প্রাচীন বিশ্ব, মহামারির পাপাংশি অন্তরন বন্ধ বিপর্যয় ছিল। কিন্তু মহামারির প্রভাব ছিল সর্বত্রাঙ্গী। যখন সে ছড়িয়ে পড়ে, তখন কোনো ওপুধই অক্রমকে সাহায্য করতে পারে না, এক কোমলকিছুই একে আঁতড়া করতে থেকে বিরত রাখতে পারে না; এর থেকে পালানোর একমাত্র উপায়, অক্রমক ব্যক্তি এক ভূমিত বস্তুর সঙ্গে যোগাযোগ এড়িয়ে চলা। এই ভাবনাবিক উদ্ভি মহামারির অভিজ্ঞকৃত উপন্যাস সম্পর্কে সমাজের একটি অস্বাভাবিকের নিকট তুলে ধরে, যা কিনা এর আগেও বিভিন্ন জেরে ধরা পড়েছিল। মানুষের পাশের ভয় এই মহামারিকে উপরের পান্ডি হিসেবে বিবেচনা করে এর বিরুদ্ধে উদ্ভিকক বর্নকে বৈতিক জ্ঞানপন পালনের জন্য একটি সতর্কবাই হিসেবে বহীত তরকে সাখা করা হয়। এই ধরনের সাখা গ্রিক সাহিত্যেও লেখা বস, যেমন হেল্লাডের উপন্যাস এবং সোফোক্লেসের গতিপাস না কিং। এর বিপরীতে জ্বলে থেকে কোনো গ্রিক এবং শ্যামি ঐতিহাসিক এই ধরনের গোপের অভিজ্ঞকৃত উপন্যাস সাখাটি প্রকরণন করেন। এইসব লোককদের হতে, মহামারি জালো এক মন্দর মধ্যে বৈষম্য মূলক সাহায্য করেনি। সে যাই হোক, লন্ডনের এই উপন্যাস মহামারি সম্পর্কিত পূর্ববর্তী লেখা থেকে অস্বাভাবিক ভিন্ন কারণ এটিতে পুই পান্ডর এক তর্বাট কোলের মত বিজ্ঞানীদের দ্বারা জীববুদ্ধিতিক বৈজ্ঞানিক অভিজ্ঞকৃত বিজ্ঞানী পঞ্জীরভাবে তুলে উঠতে দেখা যায়। বিশ শতাব্দীর প্রথম দিকে, মহামারিকে আর ঐশ্বরিক পান্ডি বা অভিজ্ঞকৃত ঘটনা হিসেবে বিবেচনা করা হত না; এই সময়কার ম্যাকটোরিরা বিজ্ঞানীদের পৌঁছিয়েছেন যে, এইসব মহামারি আসলে জীবপু দ্বারা সৃষ্টি, যা তুলুকে সাক্রমিত করে। পাপাংশি মহামারি বিশেষকর এবং জনস্বাস্থ্য বিশেষকর গোপ সাক্রমণের পদ্ধতির উপর আশেকপাত করেছেন, যা হতে রয়েছে মহামারি সীমিত করার জন্য সাধারণ প্রতিরোধমূলক ব্যবস্থার পরামর্শ। এই উপন্যাসে, মহামারির শুরুতে, জনস্বাস্থ্য উপেক্ষের পরিচয় পাওয়া যায় সি। কারণ সাধারণ মানুষ নির্ভিত ছিল যে জ্বলেটেরিকিনরা এই নতুন জীবপুকে পরজিত করার একটি উপায় খুঁজে পের করবে, যেমন তাঁরা বহীতে অন্তরন জীবপুকে পরজিত করেছেন। কিন্তু এই বৈজ্ঞানিক অগ্রপতি সত্ত্বেও, লন্ডনের সময়ে, অপরীষের অদুপা

Banwarilal Bhalotia College
Constituent College of the KAZI NAZRUL UNIVERSITY, Asansol
(GOVT. SPONSORED U. G. & P. G. College)

2019-2020

PROCEEDING OF THE
INTERNATIONAL E-CONFERENCE ON
**REVISITING STRATEGIES FOR
SUSTAINABLE DEVELOPMENT**


Teacher-In-charge
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

13TH-14TH JUNE 2020

e-ConSus 2020



Contents

- * **Corona - How can Agnihotra Help?** 15
Dr. Ulrich Berk
- * **Creating solution for waste management and water conservation** 30
Suman Kumar Guha, Tapas Kumar Bhaumik and Aayushman Chatterjee
- 1 **Gendering of Spaces, Labour and Nature: An Ecofeminist Study of Satyajit Ray's Aranyer Din Ratri** 41
Amrita Mitra
- 2 **Livelihood Effects of Industrialization on Displaced Households: A proposal for Sustainable Resettlement** 48
Chandra Kanta Saha
- 3 **Shakespeare's As You Like It: Towards a Sustainable Human Society** 59
Uddalak Dutta
- 4 **Responses of probiotics-encapsulated live feed on growth, survival and digestive enzymes of adult *Clarias batrachus* when exposed to pathogenic bacteria** 67
Atrayee Dey, Koushik Ghosh, Niladri Hazra
- 5 **Enhanced Interband Absorption in Au@Co Core-Shell Nanoparticles Embedded in Dielectric Medium** 76
Jayanta Kumar Majhi
- 6 **Sustainable Human Society** 81
Tirtha Mondal

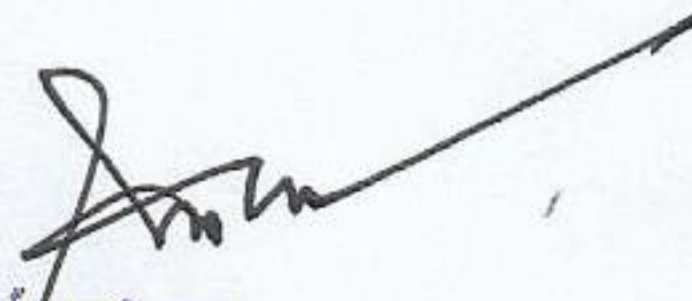
1. [Home /](#)
2. [Archives /](#)
3. [Vol. 29 No. 06 \(2020\): Vol. 29 No. 06 \(2020\) /](#)
4. Articles

Part of Speech Tagger for Natural Language Queries in Bengali

- Dipa Mondal, Prasenjit Mukherjee, Atanu Chattopadhyay, Manish Godse, Baisakhi Chakraborty

Abstract

This paper proposes a Part-of-Speech (POS) tagger in Bengali language using some predefined syntactic rules which are resident in a default database. The proposed system shall accept an arbitrary Bengali text (typed in Bengali font) to produce a Bengali POS tagged output in Bengali language which may be directly applied to Natural Language Processing (NLP) applications using Bengali Query-Response Interface Systems. Since the POS Tagger is based on syntactic rules, it does not require any training data set and hence there is no need for storage of huge amount of training data and the response of the system is also very fast. Whenever an input string in Bengali language is fed to the POS Tagger, rule patterns are generated using a sliding window. Each of the rules pattern is compared with the syntactic rule base and whenever there is a match, the POS tag of each corresponding token in the input string is extracted. The designed POS Tagger is generic, domain independent and accepts Bengali strings in structured format as input.


Principal
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan

Natural language query handling using extended knowledge provider system

Article type: Research Article

Authors: Mukherjee, Prasenjit^a | Chattopadhyay, Atanu^b | Chakraborty, Baisakhi^a | Nandi, Debashis^a

Affiliations: [a] Department of Computer Science and Engineering, National Institute of Technology, Durgapur, India | [b] Department of BCA (H), Deshabandhu Mahavidyalaya, Chittaranjan, India

Correspondence: [*] Corresponding author: Prasenjit Mukherjee, Department of Computer Science and Engineering, National Institute of Technology, Durgapur, West Bengal, India. Tel.: +91 800 102 1188; E-mail: prasen.mscit09@gmail.com.

Abstract: Extraction of knowledge data from knowledge database using natural language query is a difficult task. Different types of natural language processing (NLP) techniques have been developed to handle this knowledge data extraction task. This paper proposes an automated query-response model termed Extended Automated Knowledge Provider System (EAKPS) that can manage various types of natural language queries from user. The EAKPS uses combination based technique and it can handle assertive, interrogative, imperative, compound and complex type query sentences. The algorithm of EAKPS generates structure query language (SQL) for each natural language query to extract knowledge data from the knowledge database resident within the EAKPS. Extraction of noun or noun phrases is another issue in natural language query processing. Most of the times, determiner, preposition and conjunction are prefixed to a noun or noun phrase and it is difficult to identify the noun/noun phrase with prefix during query processing. The proposed system is able to identify these prefixes and extract exact noun or noun phrases from natural language queries without any manual intervention.

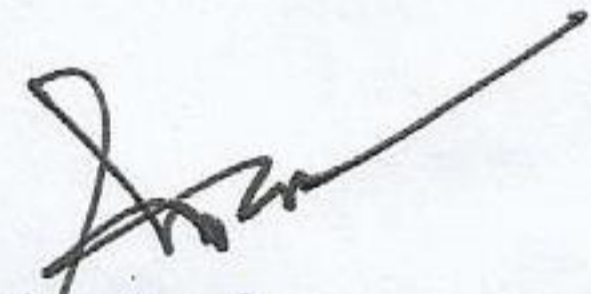
Keywords: Extended KPS, NLQ, combination based knowledge provider system, semantic analysis, natural language processing

DOI: 10.3233/KES-210049

Journal: International Journal of Knowledge-based and Intelligent Engineering Systems, vol. 25, no. 1, pp. 1-19, 2021

Published: 9 April 2021

Price: EUR 27.50


Principal
Deshabandhu Mahavidyalaya
Chittaranjan